समुद्र
और
भूमिवासी
TALES OF
SAMADHI

समुद्र और भूमिवासी

दुनिया भर के सभी महासागरों में पानी की हर एक बूंद हमेशा से उन प्राणियों के बीच रहना चाहती है, जो धरती पर निवास करते हैं। हज़ारों सालों से, समुद्रतट के किनारों से आगे बढ़ने और भूमिवासियों की दुनिया को जानने की कोशिश में, समुद्रों ने शक्तिशाली लहरें पैदा की हैं।

लेकिन सिर्फ़ कुछ बूंदों को इस लक्ष्य को हासिल करने में कामयाबी मिली है, जो समुद्रों के ऊपर मौजूद बादलों में वाष्प बनकर जा पाए, और फिर पर्वतों की ऊँची चोटियों को पार करके मानव-निर्मित शहरों में बारिश के रूप में गिरने में सफल हुए।

लेकिन उनमें से सभी बूंदें अंत में नहरों और नदियों से होती हुई वापस महासागरों में वापस लौट आयीं, जो मानव सभ्यता की चौंकाने वाली कहानियां सुनाती हैं।

'मैंने ज़िन्दगी भर इंसानों के साथ घुलने-मिलने की कोशिश की है,' एक बूढ़े बूंद ने अपने पोते से कहा। 'लेकिन मुझे कभी इसमें कामयाबी नसीब नहीं हुई।'

'इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है,' छोटे बूंद ने जवाब दिया। 'किसी भी बूंद को बेसहारा की तरह आकाश में बादलों से मिलने की उम्मीद में इंतज़ार करना पड़ता है, तो ऐसे में वो बूंद आत्मविश्वास के साथ समुद्र से भूमि पर कैसे जा सकती है?'

बूढ़े बूंद के चेहरे पर मुस्कान आ गई, वो अपने पोते के जिज्ञासु मन को देखकर ख़ुश था। 'जब हम एक चलती हुई लहर में होते हैं, तो हम अपनी पूरी ताकत जुटाते हैं, टूटती हुई लहर को रेत के टीलों से बहुत आगे जाने के लिए मजबूर करने की कोशिश करते हैं, इस उम्मीद में कि यह किसी मानव-निर्मित शहर में पहुंच जाएगी।'

छोटे बूंद ने हैरान होकर पूछा, 'लेकिन कोई भी हमारे महासागरों को क्यों छोड़कर जाना चाहेगा? मुझे उस खारे पानी का हिस्सा बनना अच्छा लगता है जो पूरे ग्रह को ढंकता है, जहाँ हर बूंद एक जैसी होती है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं एक असीम परिवार का हिस्सा हूँ।'

'तुम अभी छोटे हो,' बूढ़े बूंद ने कहा। 'किसी दिन तुम उन इंसानों की कहानियां सुनोगे जिन्हें चुनने की आज़ादी नसीब हुई है। वो सब अलग-अलग कपड़े पहन सकते हैं, अलग-अलग भाषाएं बोल सकते हैं और अलग-अलग भगवानों की पूजा कर सकते हैं। ज़्यादातर बूंदों का यही सपना है।'

छोटा बूंद अपने दादा की बातों से सहमत नहीं था, उसने कहा, 'लेकिन मुझे वो एहसास बहुत अच्छा लगता है जब मैं समुद्रतट से टकराता हूँ और रेत में खो जाता हूँ, उसके बाद पीछे आकर वापस बाकी की सभी बूंदों के साथ मिल जाता हूँ।'

'जैसा कि मैंने कहा, तुम अभी छोटे और मासूम हो। एक दिन तुम्हें भी भूमिवासियों की तरह बनने का मन होगा – वो सभी स्वाभिमानी व्यक्ति हैं, जिनमें से हर एक ज़िन्दगी में अपनी ख़ुद की राह चुनने के लिए आज़ाद है।'

छोटा बूंद सोच में पड़ गया। 'लेकिन... पानी की बूंदों को एक जैसा होने की वजह से फायदा तो ज़रूर होता होगा। हम सब एक साथ मिलकर, इतनी बड़ी लहरें बनाते हैं कि बड़े से बड़ा पर्वत भी अपनी जगह से हिल जाए। अगर हम अलग-अलग चलते हैं तो हमारे पास कोई ताकत नहीं होगी।'

उसकी बात सुनकर बूढ़ा बूंद हैरान हो गया, 'शायद तुम उतने भी नादान *नहीं* हो,' उसने आकाश को देखते हुए कहा। 'वो बादल देखो, जो हमारे ठीक ऊपर है,' उसके बाद बूढ़े बूंद ने कहा। 'यह सबसे अच्छा बादल है। तुम इसका हिस्सा बन सकते हो।'

उस छोटे बूंद को तुरंत ही समझ आ गया कि उसके पास आकाश में ऊपर जाने का मौका है, जिसकी वजह से उसके मन की जिज्ञासा बढ़ गई। 'मेरे साथ चलिए, दादाजी।'

अपनी ताकत बटोरने के बाद मैं तुम्हारे पीछे आने की कोशिश करूंगा,' बूढ़े बूंद ने जवाब दिया। 'लेकिन अभी जाओ, और अपने परिवार से दूर होने को लेकर उदास मत होना। आज़ादी की ज़िन्दगी तुम्हारा इंतज़ार कर रही है।'

छोटा बूंद ऊपर की ओर उठकर काले बादलों में मिल गया। लेकिन उसकी चेतना अभी भी बरक़रार थी। उसने सोचा, *मैं शानदार आज़ादी की ज़िन्दगी की ओर बढ़ रहा हूँ। ज़ाहिर तौर पर, मेरे दादाजी सही हैं।*

जबसे छोटा बूंद महासागर से गया था, बाकी सभी बूंदों ने और तेज़ी से मानव शहरों में जाने की अपनी योजना बनानी शुरू कर दी थी। उन सभी ने माना कि सबसे अच्छी योजना इस सच्चाई का इस्तेमाल करना है कि वे सभी समुद्रों में शारीरिक रूप से जुड़े हुए हैं।

उस बूंद के दादा ने बाकी सभी बूंदों को बताया कि, 'अगर हम अपनी ताकत को एकजुट कर लें तो इसमें कोई शक नहीं है कि हम इतनी शक्तिशाली लहर बना सकते हैं कि वो सबसे बड़े मानव शहरों तक भी पहुंच जाए।'

धरती पर सभी खारे पानी की बूंदें खुशी से झूम उठीं, जिससे समुद्र की सतह पर बुलबुले उठने लगे।

'हमारी ताकत हमारी एकता में है,' हर बूंद ने एक सुर में कहा। 'एक दिन हम सभी अलग-अलग बन जाएंगे और जिस भगवान को चाहे उसे पूजेंगे।'

'एक पास की बूंद ने कहा, 'और जब आपका पोता वापस आएगा तो वो हमें अपनी नौजवान ताकत देगा, और शानदार मानव शहर की सटीक स्थिति की वो ज़रूरी जानकारी देगा जिसकी हमें ज़रूरत है।'

भूमिवासियों के पास जाने की योजना बन चुकी थी।

अपने समुद्री घर से दूर, युवा बूंद पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक घूमता रहा, विश्व के नेताओं और आम लोगों के साथ घुलता-मिलता रहा, और उसने मानव समाज के हर पहलू का अनुभव किया।

युवा बूंद ने सोचा कि *अब मैं इस अजीब नई दुनिया के साथ तालमेल बैठा पा रहा हूँ। मैं समुद्र में वापस जाने के बाद दूसरी बूंदों के जीवन को समृद्ध बनाने की पूरी कोशिश करूंगा।*

****

पूरे महासागर में चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

'वह वापस आ गया है!' एक अधेड़ बूंद ने चिल्लाकर कहा, जिसने युवा बूंद को नमकीन पानी की नदी से निकलकर महासागर के तल पर आराम करते हुए देख

लिया था।

'लेकिन यह हिल नहीं रहा है,' युवा बूंद के दादा ने परेशान होकर कहा और अपने पोते के बगल में आ गया।

दुनिया भर की सभी खारे पानी की बूंदें करुणा के साथ जुड़ गईं, जो उस बूढ़े की तरह ही परेशान थीं।

जब उस छोटे बूंद ने थकान के साथ अपनी आँखें खोलीं तो उसके दादाजी उसके बगल में थे।

'तुम्हें क्या हुआ, मेरे बच्चे?' दादाजी ने पूछा। 'तुम इतने कमज़ोर कैसे हो गए, हम सब तो इस उम्मीद में थे कि तुम हमें इंसानों के महान शहरों तक ले जाओगे।'

युवा बूंद ने बोलने की ताकत जुटाकर धीरे से कहा। 'आप सबके साथ धोखा हुआ है।'

अपने पोते को सदमे में देखकर उसके दादा की चिंता और बढ़ गई। 'अब तुम आराम कर सकते हो। तुम वापस अपने परिवार के पास आ गए हो।'

उस छोटे बूंद को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके शरीर में बिजली की तरंगे दौड़ गई हैं। 'आह...' अपनी ऊर्जा को वापस पाकर उसके मुंह से आह निकल गई। 'मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे अंदर सभी महान सागरों की शक्ति भर रही है।'

यह सुनकर उसके दादा ने चैन की सांस ली। 'लेकिन उन महान मानव शहरों का क्या जिन्हें तुम देखकर आये हो? उस आज़ादी और स्वतंत्रता का क्या जिनका तुमने आनंद लिया है?'

छोटा बूंद थोड़ी देर रूका, उसे महसूस हो रहा था कि उसकी ऊर्जा का स्तर अपने शिखर पर पहुंच गया है। 'ज़ाहिर तौर पर, मैं उन शहरों में रहा, और मैंने उन आज़ाद लोगों के बीच वक़्त भी गुज़ारा। लेकिन मेरे अंत समय में, अगर वो नदी न होती जो मुझे बहाकर वापस महासागर में लायी तो शायद मैं इतना कमज़ोर हो जाता कि वापस ही न आ पाता... या सोचने-समझने की शक्ति खो देता।'

उस युवा बूंद की बातें सुनकर हर बूंद हैरान थी।

'तुम इतने कमज़ोर कैसे हो गए?' उस लड़के के दादा ने पूछा। 'हमने पीढ़ियों ने उन शहरों को पूजा है; ज़ाहिर तौर पर, तुम वहाँ फले-फूले होगे।'

युवा बूंद ने गहराई से सोचा और अंत में कहा, 'मैं जिस भी इंसान से मिला वो शुद्ध और गुणी था, जिसके अंदर ढेर सारी रचनात्मकता और दयालुता का अंबार था। लेकिन ऐसा लगा कि जब काफी लोग एक साथ इकट्ठा हो जाते तो एक अलग

देश, भाषा और धर्म बन जाता था, और उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए एक शक्तिशाली नेता चुना जाता था।'

'यह बहुत अच्छी संभावना मालूम पड़ती है,' दादा ने कहा। 'लोगों का इकट्ठा होना और किसी समझदार मार्गदर्शक से निर्देशित होना।'

'ऐसा नहीं है,' युवा बूंद ने जवाब दिया। 'वे समूह अन्य सभी समूहों को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानते थे। मैंने हर दिन संघर्ष और प्रतिस्पर्धा, साथ ही क्रूरता के अकल्पनीय कार्य भी देखे, और उन्हें लोगों द्वारा अन्य समूहों के लोगों के ख़िलाफ़ ख़ुद का बचाव करने के लिए सही ठहराया जाता था।'

पानी की सतह पर लहरें चलना बंद हो गईं। समुद्र में चारों तरफ सन्नाटा पसर गया।

'हिलना बंद मत करो!' युवा बूंद चिल्ला पड़ा। 'मुझे *तुम्हारी ऊर्जा* से ही शक्ति मिलती है। मुझे उस तरह से दोबारा कमज़ोर मत बनाओ, जैसे मैं इंसानों के शहर में था।'

समुद्र ने अपनी जीवंत गतिविधि फिर से शुरू कर दी।

युवा बूंद के दादा ने गंभीरता से कहा। 'समुद्र में, हम सहयोग और भाईचारे को महत्व देते हैं। और जैसा कि तुमने एक बार मुझसे कहा था, मेरे बेटे, दुनिया भर में पानी की हर बूंद एक जैसी है - जब हम साथ मिलकर काम करते हैं, तो हम सबसे ऊंचे पहाड़ को भी हिला सकते हैं।'

'या सबसे बड़े मानव शहर को भी,' पास खड़ी एक बूंद ने कहा।

'और अगर हम सब अलग-अलग हो गए,' छोटे बूंद ने कहा, 'तो हमारे पास बिल्कुल भी ताकत नहीं होगी।'

धरती पर पानी की हर एक बूंद शांत पड़ गई, वो सभी ज्वार और उछाल की हल्की लय के साथ हिल रही थीं, और एक साथ चल रही थीं।

एक क्षण बाद ही, युवा बूंद को एक तेज़ गति वाली लहर अपने साथ बहा ले गई। और लहर की चोटी पर सवार होकर, उसने दूर से एक मानव शहर को देखा।

मुझे वहाँ वापस मत ले जाओ! उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

युवा बूंद को समुद्र के किनारे फेंक दिया गया और वो शहद के रंग वाली रेत में डूब गया, उसके बाद, समुद्र में वापस जाकर बाकी सभी बूंदों के साथ मिल गया।

मुझे इस बात की ख़ुशी है कि लहर रेत के टीलों से आगे नहीं गई, छोटी बूंद ने सोचा। *मुझे किसी अलग देश, भाषा या भगवान की ज़रूरत नहीं है।*

छोटे बूंद की तरह उसके परिवार के सभी लोग भी संतुष्ट थे।

हम एक साथ मिलकर पहाड़ों को हिलाते हैं, दुनिया के समुद्रों ने सोचा।

– समाप्त –

© Ross Dadds